सत्य धर्म प्रवेशिका

SATYA DHARMA PRAVESHIKA

(भाग १)

"जो जीव, राग–द्वेषरूप परिणमित होने पर भी,
मात्र शुद्धात्मा में (द्रव्यात्मा में=स्वभाव में) ही
'मैंपन' (एकत्व) करता है और
उसी का अनुभव करता है, वही जीव सम्यग्दृष्टि है।
यही सम्यग्दर्शन की विधि है।"

लेखक – C.A. जयेश मोहनलाल शेठ
(बोरीवली) B.Com., F.C.A.

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब भी कोई जीव सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) पाना चाहता है, उसे अपने क्रोध, मान, माया, लोभ इत्यादि कषाय कम करने का प्रयास करना चाहिये। क्योंकि जब तक अपना मन शान्त नहीं होता हम सत्य-असत्य की संतुलित परीक्षा नहीं कर पाते और सत्य को प्राप्त नहीं कर पाते।

When one wishes to achieve samyagdarśana, one has to attempt to reduce one's passions of anger, arrogance, artifice, avarice, etc. because unless the mind is calm and quiet, one cannot make a balanced distinction between truth and falsehood, and cannot attain the truth.

Samyagdarśana — enlightened perception, self-realisation

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मा कभी मरती नहीं और न ही इस शरीर को छोड़ देने से अपने कर्म ही पूरे होते हैं। आत्मा अमर होने से जब कोई अपने जीवन का अन्त करके यह समझता है कि मैंने अप्रिय संयोग और कर्मों से निजात पा ली, तब वह अनजाने में ही अपने आप को छलता है। वे कर्म उसे अगले भव में भी भोगने पड़ते हैं। वैसे संयोग मिल ही जाते हैं और उस जीव में बार-बार अपने जीवन को अकाल में ही अन्त करने के गहरे संस्कार भी रोपित हो जाते हैं।

The soul is immortal. We do not attain freedom from karmas when we depart this body. If someone thinks he can escape hardships and karmic bondage by taking his own life, he is unknowingly fooling himself because the soul is immortal. He is bound to suffer those very karmas and circumstances that pushed him towards committing suicide. Worse, he has sown the seeds of suicide very deep in his psyche.

Saṃskāra — conditioning, mental impression, forming the mind, normative values

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब किसी को ऐसा लगता है कि मेरे साथ अन्याय हो रहा है या मुझसे ये संयोग सहन नहीं होते, तब उसे अन्य निम्न स्तर के जीवों की ओर देखना चाहिये। अन्य निम्न स्तर के जीवों की ओर देखने से यह पता चलेगा कि ओह! मैं तो इनसे ज़्यादा सुखी हूँ, इनकी तुलना में मेरा दु:ख कुछ भी नहीं, इत्यादि। इस तरह से हम निराशा (depression) से बच सकते हैं। जिसे दु:ख से स्थायी निजात पाना है उसे एकमात्र मोक्ष के लक्ष्य से इस असार संसार के बारे में चिन्तन करना चाहिये।

When someone feels that he is suffering from injustice and the circumstances are unbearable, then he must look at living beings less fortunate than he is. On observing them, he will realise that he is better off than they are and that his sorrows are nothing compared to theirs. This is how we can save ourselves from depression. One who wants to be permanently free from sorrow must contemplate on this worthless saṃsāra with only liberation as his goal.

Saṃsāra — vicious circle of transmigration

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

कोई भी जीव जब कुछ अच्छी वस्तु पाता है तब उसे सहज ही प्रभावना करने का भाव आता है। मगर उसे यह ख़याल रखना है कि प्रभावना करने से उसे किसी भी प्रकार का अभिमान का भाव नहीं आना चाहिये अन्यथा वह अभिमान उसके पतन का कारण बन सकता है।

Anyone who achieves something good naturally feels the desire to promulgate it. But he must make sure that such promulgation does not make him arrogant. Else, the arrogance can become the reason for his downfall.

Prabhāvanā — promulgation
Bhāva — mental disposition, emotion, intent

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हमें किसी के बारे में बुरे विचार आते हैं तब हमें युनिवर्सल लॉ (Universal Law) पढ़कर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिये। अन्यथा उस बुरे विचार से अपना ही भविष्य बिगड़ता है।

When we wish bad things for others, then we must read the Universal Law and try to get rid of them. Else, those bad thoughts shall harm our own future.

For knowing the Universal Law, please refer to www.jayeshsheth.com

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब भी कोई जीव अपना नाम करने के लिये प्रभावना करने का विचार करता है, तब उस जीव को पाप कर्मों का बन्ध होता है। इसलिये हमें इससे बचना चाहिये।

Whenever someone considers promulgation for the sake of personal fame and glory, he binds pāpa karmas. Hence, we must avoid doing things for personal glorification.

Prabhāvanā — promulgation

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

साधक को हर दिन अपनी विशुद्धि पिछले दिन की अपेक्षा अधिक करने का प्रयास करते रहना चाहिये क्योंकि अपने भाव कभी स्थिर नहीं रहते इसलिये हमें बिना निराश हुए अपना पुरुषार्थ बढ़ाते रहना चाहिये।

Each day, the seeker must attempt to enhance his own inner purity from what it was the previous day because our disposition is never stable. Therefore, we must consistently increase our puruṣārtha without losing our enthusiasm for liberation.

Sādhaka — seeker
Bhāva — mental disposition, emotion, intent
Puruṣārtha — efforts

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमारे मन में कुछ न कुछ सोच-विचार चलता रहता है, कभी-कभी हम वचन या काया का भी उपयोग करते हैं। इससे हम अच्छे या बुरे कर्म बाँधते रहते हैं। इसे आस्रव कहा जाता है।

Some thought or the other goes on constantly in our mind. Sometimes, we also use words and our body. These activities cause us to bind good or bad karmas. This is known as āsrava or the inflow of karmas.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

साधना में आगे बढ़ते वक़्त साधक को पहले अशुभ कर्मबन्ध का त्याग होता है और आगे चलकर शुभ कर्मबन्ध का भी त्याग हो जाता है। इस तरह हमारे आस्रव का सम्पूर्ण निरोध होकर हमें सिद्धत्व प्राप्त होता है।

As the seeker progresses in his sādhanā, he first sheds the bondage of inauspicious karmas and then later, he also sheds the bondage of auspicious karmas. This is how we completely stop the inflow of all karmas and attain liberation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

शुभ और अशुभ आस्रव दोनों ही बन्ध होने के कारण साधक के लिये दोनों हेय हैं। परन्तु विवेकदृष्टि से देखने पर जिसे दु:ख पसन्द नहीं है उसे सब से पहले अशुभ का त्याग करना चाहिये और अनन्त सुख के लिये एकमात्र मोक्ष के लक्ष्य से शुभ में रहना चाहिये।

The inflow of both auspicious, as well as inauspicious karmas, leads to karmic bondage and is therefore avoidable for the seeker. But when we observe judiciously, one who does not like sorrow should firstly give up the inauspicious and immerse himself in the auspicious with the sole purpose of liberation, which is concomitant with infinite bliss.

Heya — unworthy, worthless, avoidable
Jñeya — worthy of knowing
Upādeya — worthy of being practised in one's life
Viveka — judiciousness

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब इस जीवन में हमारा अनन्त काल तय होना है, तब हम ग़ाफ़िल कैसे रह सकते हैं? अर्थात् सभी को इस जीवन में सम्यग्दर्शन प्राप्त करके स्वयं को अनन्त काल के दु:ख से बचाकर सादि-अनन्त काल का सुख प्राप्त करना चाहिये।

Since this life shall determine our infinite future, how can we afford to live in ignorance? Meaning, each of us should attain samyagdarśana and save ourselves from an infinity of sorrow and attain infinite bliss.

Samyagdarśana/Samyaktva — enlightened perception, true insight, self-realisation
Ananta kāla — infinity

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

इस जीवन में हमें अपने कुटुम्ब, समाज, राष्ट्र के प्रति अपने उचित कर्तव्य का निर्वाह यथोचित रीति से करना चाहिये।

In this life, we must fulfil our appropriate duty towards our family, community and nation in the best manner possible.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपना कर्तव्य निभाते हुए हमें इस बात का भी ध्यान रखना है कि अपनी आत्म-विशुद्धि बढ़ती रहनी चाहिये। अन्यथा हमें संसार में डूबने से कोई नहीं रोक सकता।

While fulfilling our duty, we must ensure that our spiritual purity keeps increasing constantly. Else, no one can stop us from drowning in transmigration.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें किसी के भी प्रति दुर्भावना नहीं रखनी चाहिये। अन्यथा उस दुर्भावना को अपनें ही दुर्भाग्य में तब्दील होने से कोई नहीं रोक सकता।

We should never bear ill will towards anyone. Else, no one can stop that ill will from turning into misfortune for us.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें किसी के भी प्रति बुरे विचार नहीं करने चाहिये। अन्यथा उन बुरे विचारों को अपने ही दुर्भाग्य में तब्दील होने से कोई नहीं रोक सकता।

We should never bear evil thoughts towards anyone. Else, no one can stop those evil thoughts from turning into misfortune for us.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें कोई भी कार्य सिर्फ़ नामप्राप्ति के लिये ही नहीं करना चाहिये। अन्यथा उस नामप्राप्ति के लिये किये हुए कार्य को अपने ही दुर्भाग्य में तब्दील होने से कोई नहीं रोक सकता।

We should not do anything purely to gain publicity out of it. Else, no one can stop that act down to gain publicity from turning into misfortune for us.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें अनादि से डर के संस्कार हैं। इसलिये हर गृहस्थ जीव को डर होता है, वह कम-ज़्यादा हो सकता है।

Since beginningless time, fear has been part of our conditioning. Hence, each layman is fearful, although the degree may vary from person to person.

Saṃskāra — conditioning, upbringing, rearing, mental impression, mental makeup, etc.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमने जो दिया है, वही हमें मिलता है। यह नियम होने से जिन्होंने भी पूर्व में दूसरों को डराया-धमकाया है, वे नियम से कई बार डराये-धमकाये जाते हैं।

We receive what we have given to others. Because of this Universal Law, all those who have intimidated and threatened others are certain to be intimidated and threatened many times.

Niyama — law, rule

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

डर या भय, भय-मोहनीय कर्मप्रकृति की वजह से होते हैं। दूसरों को डराने से हमें भय-मोहनीय कर्म बँधते हैं। इसलिये हमें दूसरों को नहीं डराना चाहिये।

Fear and trepidation are caused by bhaya-mohanīya karmas. When we scare or threaten others, we bind bhaya-mohanīya karmas. Hence, we should never scare others.

Bhaya-mohanīya karmas — Delusion-causing karmas that give rise to fear

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

नारक और तिर्यंच के भव में भय ज़्यादा होता है। इसलिये हमें पाप कर्मों से बचना चाहियें। और एकमात्र मोक्ष के लक्ष्य से पुण्य करने चाहिये।

There is more fear in the lives of sub-humans and hellish beings. Hence, we should avoid sinning. We must do good deeds with the sole purpose of attaining liberation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम जीव-हिंसा का अंशत: भी प्रत्याख्यान करते हैं तब हम उन जीवों को अभय देते हैं। इसे अभयदान भी कहा जाता है, यह अभयदान उत्कृष्ट दान कहलाता है। इससे अपना भय सहज ही कम होता है।

When we carry out even a partial pratyākhyāna for any harm we may have caused to living beings, we grant those living beings the boon of fearlessness. This is also known as Abhaya Dāna. It is the supreme boon. Granting abhaya dāna to others results in a lessening of our fear.

Abhaya dāna — the boon of fearlessness

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जीवों को अभय देने से हमें अभय प्राप्त होता है। सर्वोत्कृष्ट अभय केवलज्ञान होने पर ही मिलता है। इसलिये हमें अपना पूरा पुरूषार्थ सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) प्राप्त करके मुक्त होने के लिये ही करना चाहिये।

When we grant abhaya dāna to others, we gain fearlessness. The highest level of fearlessness can only be achieved when one attains omniscience. Hence, we must concentrate our full efforts on gaining samyagdarśana (self-realisation) and attaining liberation.

Abhaya dāna — the boon of fearlessness
Samyagdarśana/Samyaktva — enlightened perception, true insight, self-realisation
Ātma Jñāna — self-realisation
Kevala Jñāna — omniscience

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिन जीवों को जानने में भाव-मन सहायक है वे छद्मस्थ कहलाते हैं। और जिन्हें भाव-मन की सहायता बग़ैर मात्र अपनी आत्मा से ज्ञान होता है, उन्हें केवली कहते हैं। उनके ज्ञान को केवलज्ञान कहते हैं।

Living beings who know with the help of their mind are known as chadmastha {non-omniscient}. And those who know without having to use their mind, who know directly through their soul are known as Kevalīs. Their knowledge is known as Kevala Jñāna.

Chadmastha — non-omniscient
Kevalī — omniscient
Kevala Jñāna — omniscience

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जल्दबाज़ी हमेशा तकलीफ़ देती है। लोगों को जल्दी से आत्मानुभूति चाहिये होती है मगर उन्हें यह नहीं पता कि हर कार्य का योग्य कारण होता है। जो लोग सही कारण देंगे उन्हें आत्मानुभूति अपने आप मिलनेवाली है। अर्थात् आत्मानुभूति जल्दबाज़ी से नहीं योग्य कारण देने से मिलती है। जल्दबाज़ी से तो आर्तध्यान यानी पाप का बन्ध होता है।

Haste always leads to difficulty and trouble. People are impatient to attain self-realisation but they do not realise that there is an appropriate cause for each effect. Those who provide the right cause shall automatically attain self-realisation. Hence, self-realisation is attained by providing the right cause, not by being in a rush. Haste leads to mournful reflection, resulting in the bondage of pāpa karmas with the soul.

Ātmānubhūti — the experience of the self, self-realisation
Arta Dhyāna — saturnine/mournful reflection

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

ज़्यादातर लोगों की दृष्टि पर्यायदृष्टि होती है। वे हर जीव और वस्तु को पर्यायदृष्टि से ही देखते हैं। इस कारण से वे उस जीव या वस्तु के त्रिकाल रूप से अनजान ही रह जाते हैं। त्रिकाल रूप जानने के लिये द्रव्यदृष्टि होनी आवश्यक है।

Most people only look at the present form of a substance/person. They only consider the present form of a person or substance. Hence, they remain unaware of the permanent unchanging inner core of a person or substance. One needs to possess the dravya dṛṣṭi to know the permanent unchanging inner core of a person or substance.

Paryāya — the constantly changing manifestations of a substance/the present form of a substance
Paryāya Dṛṣṭi — seeing only the current form/aspect of a person or substance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

पर्यायदृष्टि से जीव चार गतियोंवाला जानने में आता है, जब कि द्रव्यदृष्टि से हर जीव सिद्ध समान जानने में आता है। इस तरह द्रव्यदृष्टि रखने से हम अपना उत्थान भी कर सकते हैं और हर एक जीव के प्रति समता भाव भी रख सकते हैं।

When seen from the paryāya dṛṣṭi, a living being is seen as belonging to one of the four categories of existence: celestial being, human, sub-human, and hellish being. When seen from the dravya dṛṣṭi, each living being is like a Siddha (liberated soul). Thus, when we see everyone from the dravya dṛṣṭi, we not only attain apotheosis/upliftment-elevation of our soul but also retain our equanimity towards each living being.

Paryāya Dṛṣṭi — seeing only the present form of a person or substance
Dravya Dṛṣṭi — the ability to see the true/intrinsic nature of a person or substance
Gati — category of worldly existence, viz. Celestial being, human, sub-human and hellish being.
Siddha — the soul which has attained liberation, is free from the vicious circle of transmigration and exists forever in a state of infinite bliss and beatitude. Such a soul resides at the top of the universe and is known as God.
Utthāna — apotheosis, attaining godhood, upliftment-elevation of our soul
Samatā Bhāva - feeling of equanimity

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

पर्यायदृष्टि से जीव दोषी जानने में आता है, जब कि द्रव्यदृष्टि से हर जीव निर्दोष जानने में आता है। इस तरह द्रव्यदृष्टि रखने से हम अपना उत्थान भी कर सकते हैं और हर एक जीव के प्रति समता भाव भी रख सकते हैं।

When seen from the paryāya dṛṣṭi, each living being seems to be guilty and blameworthy. When seen from the dravya dṛṣṭi, we know that each living being is blameless. Thus, when we see everyone from the dravya dṛṣṭi, we not only attain apotheosis/upliftment-elevation of our soul but also retain our equanimity towards each living being.

Paryāya Dṛṣṭi — seeing only the present form of a person or substance
Dravya Dṛṣṭi — the ability to see the true/intrinsic nature of a person or substance
Utthāna — apotheosis, attaining godhood, upliftment-elevation of our soul

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अनुचित शर्त रखकर दिया गया कोई भी दान हमें पाप का बन्ध कराता है।

Stipulating an inappropriate or unjust condition when donating shall result in the bondage of pāpa karmas.

Pāpa — sin, demerit, disabling power, inauspicious disposition

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम मन्दिर या धर्मस्थानक में अपना वर्चस्व बनाने के लिये दान देते हैं तब वह दान हमें अवश्य ही पाप का बन्ध कराता है।

If we donate to a place of worship to establish our dominance, such a donation is certain to result in the bondage of pāpa karmas.

Pāpa — sin, demerit, disabling power, inauspicious disposition

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमारा भविष्य हमारी वर्तमान भावना के अनुरूप ही होता है। इसलिये हमें हर हाल में अच्छी भावना रखने का ही प्रयास करना चाहिये।

Our current disposition/intention determines our future. Hence, we have to try our level best to always retain a good disposition/intention in all situations.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

लोगों को लगता है कि धर्म के मार्ग पर चलना दश्वार है मगर जब एक बार यह अहसास हो जाये कि धर्म के मार्ग के अलावा अन्य कोई भी मार्ग मुझे अनन्त दु:ख ही देनेवाला है, तब उसी धर्म के मार्ग पर चलना सहज और आसान बन जाता है।

People think that it is difficult to walk on the path of dharma. But once you realise that any path other than dharma shall only cause infinite pain, the path of dharma becomes easy and effortless.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब किसी के पाप का उदय आता है तब उसका जीना भी दुश्वार हो जाता है। लेकिन धर्म के मार्ग पर चलने से नये पाप कर्म कम बँधते हैं, इससे उसका मार्ग भी आसान हो जाता है।

When one experiences the consequences of their sins, life becomes difficult indeed. But he who walks on the path of dharma binds few pāpa karmas. As a consequence, his journey becomes easier.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

धर्म के मार्ग पर चलते हुए किसी को अगर अपने पूर्वकृत पाप का उदय आ भी जाये तो वह अपनी सच्ची समझ की बदौलत उस दु:ख को भी आसानी से, बिना दु:खी हुए पार कर लेता है।

If a person experiences the consequences of his past sins while walking on the path of dharma, on the strength of his true insight, he bears that pain with ease, without getting upset.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब किसी को धर्म का मार्ग आसान और एकमात्र चलने योग्य मार्ग लगे, तब उन्हें यह समझना है कि वे जल्द ही भव को पार करानेवाला सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) पा लेंगे।

When a person finds the path of dharma to be simple and the only one worth walking on, he should realise that he is on the threshold of samyagdarśana.

Samyagdarśana/Samyaktva — enlightened perception, true insight, self-realisation

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) चाटुकारिता से नहीं पाया जा सकता। हाँ, गुरु के विनय से अवश्य पाया जा सकता है। गुरु का असली विनय उनकी चाटुकारिता नहीं बल्कि उनके कहे पथ पर चलने की तत्परता है।

Samyagdarśana cannot be attained by obsequious behaviour. Yes, it can certainly be attained by reverence to the preceptor. True reverence to the preceptor entails being eager to walk on the path shown by the preceptor, not behaving obsequiously towards him.

Samyagdarśana/Samyaktva — enlightened perception, true insight, self-realisation

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

संसार में भी लोग समझते हैं कि धनिकों की चाटुकारिता करके हम धन कमा लेंगे मगर उन्हें यह नहीं पता कि धन, धनिकों की चाटुकारिता से नहीं बल्कि अपने पुण्य से मिलता है।

In this world, people think that they will earn money if they behave obsequiously towards the rich. But they are not aware that wealth is gained as a consequence of one's puṇya, not by flattering the rich.

Puṇya — virtue, merit, enabling power, auspicious disposition
Pāpa — sin, demerit, disabling power, inauspicious disposition

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम चाहते हैं कि सब हमारी इच्छा के अनुरूप हो, यह इच्छा ही हमारे लिये दु:ख का कारण बनती है। क्योंकि अगर पुण्योदय से हमारी चाहत के अनुरूप हो भी गया तो उससे अपना कतृत्वभाव या अहंकार बढ़ता है जो कि भविष्य में मेरी आत्मा के (मेरे) लिये दु:ख का कारण बनने में सक्षम है। और अगर पापोदय से अपनी चाहत से विपरीत हो तो वह वर्तमान और भविष्य दोनों ही बिगाड़ने में सक्षम है।

We would like everything to work as per our wishes. This desire becomes a cause of sorrow for us. Because even if things fall in place exactly as per our wishes due to the fruition of our puṇya karmas, it increases our sense of doership or arrogance which is capable of causing grief to our soul (us) in future. And if what transpires is the opposite of what we wanted, due to the rise of our pāpa karmas, it is capable of adversely affecting our present as well as our future.

Puṇya — virtue, merit, enabling power, auspicious disposition
Pāpa — sin, demerit, disabling power, inauspicious disposition
Kartā bhāva – thinking oneself as being able to do anything as one's desire

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम अपनी इच्छानुसार सब को परिणमाना चाहते हैं यह हमारी सब से बड़ी ग़लतफ़हमी है। क्योंकि सब का परिणमन अपने-अपने कर्म और पुरुषार्थ के अनुसार होता है, न कि हमारी इच्छानुसार।

We want other's disposition as per our wishes. This is our greatest misunderstanding because other's disposition will be as per their karmas and efforts, not according to our wishes.

Puruṣārtha — efforts

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम सबसे ज़्यादा कर्म मन से बाँधते हैं। इसलिये हमें मन को मात करना सीखना चाहिये। उसके लिये हमारी किताब "सम्यग्दर्शन की विधि" का २४वाँ प्रकरण हृदयंगम करना चाहिये।

We bind the highest quantum of karmas through the mind. Hence, we need to learn how to conquer the mind. For this, please internalise Chapter 24 of my book 'Samyagdarshan Ki Vidhi'.

To download 'Samyagdarshan Ki Vidhi' please visit
www.jayeshsheth.com

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

ज़्यादातर लोग पर्यायदृष्टि/व्यवहार से ही त्रिकाली ध्रुवात्मा पाना चाहते हैं। व्यवहार भेद करने वाला होने से उन्हें त्रिकाली ध्रुवात्मा प्राप्त नहीं होती। उसके लिये हमारी किताब "सम्यग्दर्शन की विधि" का ७वाँ प्रकरण हृदयंगम करना चाहिये।

Most people wish to attain the eternal pure soul from the vyavahāra point of view. But the eternal pure soul is not attained by differentiating from the vyavahāra naya. For that, please internalise Chapter 7 of my book 'Samyagdarshan Ki Vidhi'.

Vyavahāra Naya - Divisive viewpoint/viewpoint explaining one thing by dividing it notionally

To download 'Samyagdarshan Ki Vidhi' please visit www.jayeshsheth.com

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

पर्यायदृष्टि/व्यवहार से ही त्रिकाली ध्रुवात्मा पाने की चाह रखना यानी आत्मा में द्रव्य और पर्याय ऐसे वास्तविक भेद मानकर उनमें से द्रव्य को पाने की चाह करना। व्यवहार भेद करने से उन्हें त्रिकाली ध्रुवात्मा प्राप्त नहीं होती। उसका सत्य स्वरूप समझने के लिये हमारी किताब "सम्यग्दर्शन की विधि" का ५वाँ प्रकरण हृदयंगम करना चाहिये।

Wanting to attain the eternal pure soul from the vyavahāra point of view means assuming that the soul is divided into dravya and paryāya in reality and then desiring dravya out of them. Distinctions from the vyavahāra naya do not lead to the attainment of the eternal pure soul. To understand the true/real nature of this process, please internalise Chapter 5 of my book 'Samyagdarshan Ki Vidhi'.

Paryāya Dṛṣṭi - the viewpoint that considers only the current/present form of a substance or person
Vyavahāra Naya - Divisive viewpoint/viewpoint explaining something by dividing it notionally
Dravya - substance
Paryāya - current/present manifestation of a substance
Trikālī Dhruvātmā - eternal pure soul
Satya Svarūpa - true/real nature
To download 'Samyagdarshan Ki Vidhi' please visit www.jayeshsheth.com

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

पञ्चाध्यायी पूर्वार्ध के श्लोक २४७ में बताया है कि - "पर्यायार्थिक नय से (पर्यायदृष्टि से) उत्पाद है, व्यय है तथा ध्रौव्य है परन्तु द्रव्यार्थिक नय से (द्रव्यदृष्टि से) न उत्पाद है, न व्यय है तथा न ध्रौव्य है।" यानी एक सत् ही प्रकाशमान है। इसलिये जिसे पर्यायरहित मात्र ध्रुव ही चाहिये उसे पर्यायदृष्टि ही मानना चाहिये। क्योंकि भेद को पर्यायार्थिक नय बताया है और अभेद को द्रव्यार्थिक नय बताया है। उसका सत्य स्वरूप समझने के लिये हमारी किताब "सम्यग्दर्शन की विधि" का ८वाँ प्रकरण हृदयंगम करना चाहिये।

Utpāda - creation
Vyaya - destruction
Dhrauvya - constancy
Paryāyārthika Naya - viewpoint that considers only the current/present form of a substance
Dravyārthika Naya - viewpoint that considers only the eternal form of a substance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

In verse 247 of the Pañcādhyāyī, it is stated that from the bheda viewpoint that there is creation, destruction and constancy. But from the abheda viewpoint, there is neither creation nor destruction nor constancy. Which means that only existence is constant. Hence, if someone seeks an eternal pure dravya free from paryāyas, he should be considered as a person with the bheda viewpoint. Because differentiation represents the bheda viewpoint and abheda represents the absolute/solid oneness in viewpoint. To understand the true nature of this abheda, please internalise Chapter 8 of my book 'Samyagdarshan Ki Vidhi'.

Sat - existence
Bheda - differentiation/divisive
Abheda - undifferentiated/solid/oneness
To download 'Samyagdarshan Ki Vidhi' please visit
www.jayeshsheth.com

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

लोग आत्मा की ४७ शक्तियाँ, आत्मा के गुण और उनके कार्य, इत्यादि का रसपूर्वक वर्णन करके उस पर ध्यान भी लगाते हैं। ये सभी एक, अखण्ड, अभेद आत्मा के भेद होने के कारण व्यवहार हैं, पर्यायार्थिक नय (पर्यायदृष्टि) हैं। इसलिये इन सबके वर्णन पर लक्ष्य न रखकर हमें अपना लक्ष्य एकमात्र ज्ञायक के ऊपर ही रखना है जो कि एक, अखण्ड, अभेद है।

People lovingly describe the 47 powers of the soul, the attributes of the soul and their functions, etc. and even meditate upon them. But since all of them are distinctions of the one, undivided, undifferentiated soul, they are from the vyavahāra naya or the paryāyārthika naya. Hence, rather than focus on their description, we must focus only on the jñāyaka (knower), which is one, solid, undivided and undifferentiated.

Vyavahāra Naya - Divisive viewpoint/viewpoint explaining one thing by dividing it notionally
Paryāyārthika Naya - viewpoint that considers only the current/present form of a substance
Jñāyaka - knower

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

पर्यायदृष्टिवालों को बात-बात पर बुरा लग जाता है, जब कि द्रव्यदृष्टिवालों को ऐसा नही होता। क्योंकि पर्यायदृष्टि व्यक्ति के लिये वर्तमान ही सब कुछ है जबकि द्रव्यदृष्टि व्यक्ति के सामने वस्तु का त्रिकाल स्वरूप होता है। इसलिये वे वर्तमान में बात-बात पर बुरा नहीं लगाते।

Those who only see the current aspect of a substance and not its eternal nature, take offence easily. This is not the case with those who perceive the entire picture. Because for the former, only the current aspect matters but in the case of the latter, they can perceive the eternal nature of a substance. Therefore, they are not offended by the current manifestations of a substance or a person.

Paryāya Dṛṣṭi - a viewpoint that considers only the current/present form of a substance
Dravya Dṛṣṭi - a viewpoint that considers only the eternal form of a substance
Vyavahāra Naya - Divisive viewpoint/viewpoint explaining one thing by dividing it notionally

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमारी अनादि की वासनाएँ हमें अपने साधना पथ से चलित करने में सक्षम होती हैं। इसलिये हमें साधना पथ पर चलते हुए हरदम चौकन्ना रहना चाहिये।

Since infinite time, we have harboured several passions. They are capable of distracting us from the path of sādhanā. Hence, we must be constantly alert while walking on the path of sādhanā.

Vāsanā - lust, desire for sesusual pleasures
Sādhaka - seeker
Sādhanā - process of constant and focused correct efforts

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमने अनादि से अपने अभिप्राय में बाह्य-सुख को ही सच्चा सुख माना है, परन्तु जब अपनत्व शरीर से निकलकर आत्मा में होता है तब सच्चे सुख का अनुभव होता है। वही सच्चा सुख है इस बात में श्रद्धा आनी चाहिये।

Since infinite time we have believed external pleasure to be real happiness. But true happiness is only experienced when our sense of oneness moves from the body to the soul. One must have faith in the fact that it is the only real happiness.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

ज़्यादातर लोग पुण्योदय में अहंकारी बन जाते हैं और पापोदय में खिन्न रहते हैं क्योंकि वे उसे अपने पुरुषार्थ का फल मानते हैं। वास्तव में पाप-पुण्य के उदय तो अपने पूर्वकृत कर्मों के फल हैं।इसलिये हमारा अधिकार पुरुषार्थ करने पर है, उसके फल पर नहीं। क्योंकि उसका फल अपने पूर्वकृत कर्मों के अनुकूल होता है, न कि अपनी इच्छा के अनुसार।

Most people become arrogant when the rise of puṇya ensures things go their way, and become despondent and irritable when the rise of pāpa karmas ensures that things do not go their way. This is because they think that success and failure are a direct result of their efforts. In reality, the rise of puṇya and pāpa is the consequence of our past karmas. Hence, putting in the right efforts is our prerogative, not the results thereof. The result of our efforts is a function of our past karmas, not our

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मज्ञान के लिये मन का शान्त और सन्तृप्त होना आवश्यक है क्योंकि स्थिर पानी में ही अपना प्रतिबिम्ब दिखता है।

To attain knowledge of the self, the mind must be calm and content because one can only see one's reflection in still water.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम थोड़ी देर किसी भी प्रकार की ध्यानमुद्रा में बैठकर शान्ति पा लेते हैं तब हमें यह जाँच करनी है कि ध्यान से बाहर आने के बाद भी हमारे मन की शान्ति बनी रहती है क्या? क्या हमारे क्रोध-मान-माया-लोभ कम हो रहे हैं? क्या हमारी इच्छाएँ कम हो रही हैं? अगर ऐसा नहीं हो रहा है तो हम अपने आप को छल रहे हैं।

When we attain peace and tranquillity after practising any kind of meditation, we must assess for ourselves whether that sense of peace and tranquilness remains with us even after coming out of meditation. We must also check if our anger, arrogance, artifice and avarice are reducing. And whether our desires are decreasing. If this is not the case, then we are deceiving ourselves.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

ज़्यादातर लोगों की यही मान्यता है कि धन से सुख मिलता है। परन्तु वास्तव में ज़रूरत से ज़्यादा धन सुख न देकर उसको सम्भालने का और उसको बढ़ाने का तनाव और लालसा देता है, जिसे सुख नहीं दु:ख ही समझना चाहिये।

Most people believe that wealth causes happiness. But in reality, excessive wealth does not cause happiness. Instead, it brings with it the tension and desire to protect and increase that wealth. This should be recognised as sorrow, not happiness.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

मैत्री भावना – सर्व जीवों के प्रति मैत्री चिन्तवन करना, मेरा कोई दुश्मन ही नहीं ऐसा चिन्तवन करना, सर्व जीवों का हित चाहना।

प्रमोद भावना – उपकारी तथा गुणी जीवों के प्रति, गुण के प्रति, वीतरागधर्म के प्रति प्रमोदभाव लाना।

करुणा भावना – अधर्मी जीवों के प्रति, विपरीत धर्मी जीवों के प्रति, अनार्य जीवों के प्रति करुणाभाव रखना।

मध्यस्थ भावना – विरोधियों के प्रति मध्यस्थभाव रखना।

– मुखपृष्ठ की समझ –

अपने जीवन में सम्यग्दर्शन का सूर्योदय हो और उसके फलरूप अव्याबाध सुखस्वरूप सिद्ध अवस्था की प्राप्ति हो, यही भावना।